हिंदी की अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता

डॉ अनीश
सहायक प्रवक्ता, हिंदी विभाग
जी.एम.एन कॉलेज, अम्बाला छावनी

सार्वदेशिकता, सार्वकालिकता, सार्वभौमिकता, औदार्य, सर्वप्रियता, सर्वग्राह्यता, सर्वव्यापकता आदि विशेषणों एवं उपाधियों से अलंकृत एव प्रतिष्ठित हिंदी भाषा न केवल भारत में प्रत्युत पूरे स्वाभिमान के साथ, अपने पूरे सौष्ठव के साथ विदेशी देहरी एवं विदेशियों के ओष्ठों पर विद्यमान है। विदेशों में हिंदी का अनुसंधान एवं अध्यापन बहुत ही प्रामाणिक एवं त्वरित गति से हो रहा है। मेरे इस शोध पत्र का अभीष्ट हिंदी की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को प्रस्तुत कर हिंदी की ख्याति एव लोकप्रियता को उकेरना है।

1. हिंदी के अनन्य अनुरागी: फ़ादर कामिल बुल्के

संपूर्ण हिंदी जगत बेल्जियम के विद्वान फादर कामिल बुल्के के हिंदी प्रेम से परिचित है। फादर कामिल बुल्के पर तुलसीदास की यह उक्ति अक्षरक्ष:चरितार्थ होती है-''उपजहिं अनत, अनत छवि लहहीं'' यानी उत्पन्न कहीं होते है, शोभा कहीं और पाते है। बेल्जियम से सा यत धर्म का प्रचार करने निकले कामिल बुल्के हिंदी वर्णमाला के लावण्य एवं भारतीय मनीषा से इतना प्रभावित हुए कि आत्मविस्मृति की स्थिति को पहुंच गए, अपना गंतव्य भूल गए और भारतीयता के रंग में इस तरह रंगे कि अपराजित पौरुष राम को अनुसंधान का विषय बना लिया। इनके द्वारा प्रणीत ग्रंथ 'रामकथा उत्पति और विकास' आज देश-विदेश के महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों के सौदर्यकरण में संवर्द्धन कर रहा है। कामिल बुल्के ने एक अवसर पर 'आलोचना' पत्रिका में भारत के प्रति अपने उद्‌गारों को व्यक्त करते हुए लिखा था।'' भगवान के प्रति धन्यवाद, जिसने मुझे भारत भेजा है और भारत के प्रति धन्यावाद, जिसने मुझे इतने प्रेम से अपनाया है।

2. हिंद से बाहर हिंदी

हिंद से बाहर हिंदी को स्थापित करने हिंदी सिनेमा ने अप्रतिम भूमिका निभा है। अनेक विद्वानों ने विदेशो में हिंदी शिक्षण के लिए हिंदी फ़िल्मी को निमित्त बनाया है जिसके लिए जापान के प्रो. तोमिया मिज़ोकामी का नाम सर्वविदित है। उन्होंने लगभग 300 फिल्मी गानों का हिंदी से जापान में अनुवाद किया है। ''अमेरिका में डॉ. अजना संधीर ने भी हिंदी-शिक्षा के लिए हिंदी फिल्मी गानों का उपयोग किया और फिल्मी गानों के आधार पर एक पुस्तक तैयार की। त्रिनिदाद के विषय में तो यह विख्यात है कि वहाँ पर 'सुहानी शाम ढल चुकी है, तुम कब आओगे.....

एक अघोषित राष्ट्रीय गान का स्थान ले चुका है। किसी भी सामूहिक आयोजन में इस गाने को अवश्य बजाया जाता है। इसी प्रकार फीजी में 'विलेज सिनेमाघर' में निरतंर भारतीय हिंदी फिल्मों को प्रदर्शित किया जाता रहता है। वहाँ पर एक बार सथानीय कलाकारों ने 'अधूरा सपना' और 'घरपरदेस' नाम से हिंदी फ़िल्म भी निर्मित की थी। चीन में भी हिंदी फ़िल्मों का स्पष्ट प्रभाव क्लब और रेस्तोराँ आदि में दिखा देता है। हिंदी फ़िल्मी गानों की धुनों पर अतिथि नाचते हैं।''1 लेइडन विश्वविद्यालय में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी भाषा के शिक्षण में अभिषेक अवतस भी फ़िल्मी गीतों का प्रश्रय लेते है। एक बार उन्होंने 'मेरा जूता है जापानी' गीत पढ़ाया था। अभी हाल में ही तुझमें रब दिखता है के बहाने 'तू' शब्द और उसके रूप समझाए।

3. हिंदी का संसार

वर्तमान समय कम्पूटर एवं इन्टरनेट का युग है। गूगल के एक वरिष्ठ अधिकारी की ये स्वीकारोक्ति काफी महत्वपूर्ण हैं कि आने वाले कुछ वर्षों में भारत दुनिया के बड़े कप्यूटर बाजारों में से एक होगा और इन्टरनेट पर जिन तीन भाषाओं का दबदबा होगा वे हैं - हिंदी, मेंडरिन और अंग्रेजी। इन्टरनेट पर हिंदी के पोर्टल अब व्यावसायिक तौर पर आत्मनिर्भर हो रहे

ISBN: 978-81-954645-0-0

है। क दिग्गज कपंनियां चाहे वो याहू हो, गूगल हो या को भी हिंदी को अपना रही है। माइक्रोसॉफट के डेस्कटॉप उत्पाद हिंदी में उपलब्ध है। आ बी एॅम, सन-मैक्रो सिस्टम, ओरक्ल आदि ने भी हिंदी को अपनाना शुरु कर दिया है। इस -संसार में लोग विविध- प्रविधियों व संसाधनों से हिंदी भाषा के स्वरूप को सीख रहे है। ''निजी स्तर पर हिंदी सिखाने के नए-माध्यम के तौर पर उभर रहा है-स्काइप। अमेरिका के सीऐटल का बारह-वर्षय रयान स्पैनसर हर इतवार पूरा एक घंटा भारत में स्थित अपने हिंदी-शिक्षक से स्काइप पर हिंदी वर्णमाला सीखता है। वह अकेला ही नहीं है। पश्चिमी देशों में बढ़ती माँग देखकर क लोगों ने स्काइप पर हिंदी सिखाने का व्यापार शुरू कर दिया है। 2009 में कुछ भारतीय भाषा विशेषज्ञों ने एक अमेरिकन के साथ स्काइपर पर हिंदी सिखाने का एक संस्थान ही खड़ा कर दिया। सन् 2010 के 70 छात्र अगले साल तक 490 हो गए।''2 भूमण्डलीकरण के गर्भ से उत्पन्न बाजार ने हिंदी को माध्यम बनाया। बड़ी-बड़ी कम्पनियां एंव कार्पोरेट जगत ने स्वयं के वौजूद को बचाए रखने के लिए, स्वयं को गतिमान रखने के लिए, हिंदी भाषा की ओर प्रयाण किया है।

4. विदेशों में हिंदी पत्रकारिता एंव पत्रिकाएँ

शताब्दियों से हिंदी भाषा विश्व के अनेक देशों ने अपने वौजूद एवं महत्व का पताका फहरा रही है, क्योंकि क राष्ट्रों से हिंदी में प्रकाशित पत्रिकायें इसके ज्वलत दस्तावेज है। इंग्लैड विश्व का पहला राष्ट्र है जहाँ से सर्वप्रथम सन् 1883 में कालाकांकर (प्रतापगढ़) उत्तरप्रदेश के नरेश राजा रामपाल सिंह ने 'हिदोस्थान' त्रैमासिक पत्रिका का संपादन और प्रकाशन किया। यह हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी में निकला था। लदन में विगत दशक से 'पुरवाइ' हिंदी मासिक का प्रकाशन हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की अनेक पत्रिकाओं का संपादन करने वाले राष्ट्रों में मॉरीशस का स्थान अग्रपांक्तेय है। मॉरीशस को दो बार 'विश्व हिंदी सम्मेलन' के आयोजन का गौरव भी प्राप्त हो चुका है। इस ष्टि से यह देश 'विश्व हिंदी का महातीर्थ बन चुका है। 'हिन्दुस्तानी', 'आर्यवीर' 'जाग्रति' 'अनुराग' 'भारत दर्शन' 'आक्रोश' 'रिमझिम' 'विश्व हिंदी पत्रिका' आदि मॉरीशस की ऐसी पत्रिकाएँ है जिन्होंने हिंदी भाषा के अभ्युदय एवं विकास में अक्षुण्ण अवदान दिया है। 'फीजी' ने भी हिंदी पत्रकारिता के संपादन में अनुपम योगदान दिया है। यहां इस विलायती भूमि पर अविरल रूप से हिन्दी पंत्रिकाओं का संपादन हो रहा है। 'शांतिदूत', 'जय फीजी', 'आवाज', 'फीजी सन्देश' ' फीजी समाचार आदि पत्रिकाओं ने हिंदी भाषा को सार्वजनीनकरने में ऐतिहासिक भूमिका निभा है। कनाडा ने ''हिंदी लिटरेरी सोसाइटी ऑफ कनाडा के तत्त्वावधान में हिंदी संवाद त्रैमासिक पत्र निकलता है। सन् 1982 से हिंदी चेतना का प्रकाशन डॉ. सुधा ओम ढींगरा कर रही है।.... टोरंटो से सन् 1975 से भारती मासिक हिंदी-अंग्रेज़ी पत्र संपादन श्री त्रिलोचन सिंह गिल रह रहे हैं। इसके अतिरिक्त विश्व भारती पाक्षिक पत्र का संपादन श्री रघुवीर सिंह कर रहे है।''3 नार्वे , हॉलैंड, सुरीनाम , गुयाना के अतिरिक्त शारहजाँ, हंगरी, में भी हिन्दी पत्रकारिता का समृद्ध एवं सु ढ़ स्वरूप अवलोकनीय है

5. हिंदी का प्रवासी साहित्यः-

'प्रवास' करने के कारण ही मानव 'प्रवासी' कहलाता है। शब्दकोशों में इन दोनों शब्दों के व्यापक अर्थ दिए गए है। मूलतः 'प्रवास' संस्कृत का शब्द है। अतः संस्कृत शब्दोकोशों में इसका क्या अर्थ है जान लेना चाहिए। वामन शिव राम आप्टे लिखते है कि ''प्रवास (प्र+वस+घञ्) 1. विदेशरामन, विदेश यात्रा, घर पर न रहना, परदेश निवास।''4

प्रवासी साहित्य की परम्परा बहुत पुरानी है, किंतु फिर भी प्रवासी साहित्य अपनी संवेदनात्मक रचनार्धिमता से साहित्य के क्षेत्र में अपना यश-कलश स्थापित कर चुका है। भारतीय प्रवासी लेखक भावनात्मक रूप से अपनी मातृभूमि से जुड़े हुए है, यही कारण है कि विदेशी भूमि पर रहते हुए भी उनके अंतर्मन से मातृभाषा एवं अपनी माटी के प्रति सतत भाव निःसृत हो रहे है। उषाराजे, सुषमबेदी, तेजेन्द्र शर्मा, दिव्यामाथुर, गौतम सचदेव, अनीता कपूर, सोधा ओम ढींगरा ऐसे ही कुछ प्रवासी साहित्यकार है जिनके हिंदी साहित्य लेखन में क वर्षों से नैरन्तर्य देखा जा सकता है। पंजाब में जन्में तेजेंद्र शर्मा सात समन्दर पार के उन चार-पाँच बेहतरीन लेखकों में से एक है जिन्होंने इधर और उधर के लोगों की समस्याओं और संवेदनाओं पर बहुत ही मर्मस्पर्श ढंग से अपनी कलम चला है। तेजेन्द्र शर्मा विसंगतियों के शिल्पी है। दिव्या माथुर इंग्लैंड के प्रसिद्ध रचनाकारों में से एक है। इनकी रचनात्मकता के क आयाम है-कविता, कहानी, नाटक, अनुवाद आदि। प्रवासी हिंदी साहित्यकार अलका

शर्मा वाइस ऑफ अमेरिका में कुछ समय कार्यरत रही थी। बाद में लंदन में बी.बी.सी की हिंदी सेवा की अध्यक्ष है। इनके लेखन में भारतीय समाज की संवेदना की अभिव्यंजना दिखा देती है। अर्चना पैन्यू ली डेन्मार्क में रहती है। इनकी रचनाएँ नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है। प्रवासी हिन्दी साहित्य के अवदान की चर्चा में श्री कमल किशोर गोयनका का कथन है कि ''हिन्दी का प्रवासी साहित्य भारतेत्तर देशों को भारत से जोड़ने का एक सेतु बनता है जिसके मूल में भारतवंशियों का स्वदेश प्रेम, भाव प्रेम, संस्कृति-प्रेम के साथ उसकी संलग्नता ,सहभागिता एवं सहयोग अटूट रूप में सम्ब) है। यह सेतु विश्व-व्यापी हिंदी साहित्यिक समाज का निर्माण करता है।''5

6. विश्व हिंदी सम्मेलन और हिंदी की अन्तर्राष्ट्रीयता-

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी निरंतर प्रगतिशील है। विराट हिंदी सम्मेलन इस बात का द्योतक है कि हिंदी दुनियाभर में सर्वप्रयोगिक भाषाओं में से एक है। मॉरीशस, जोन्इसबर्ग, भोपाल, इंग्लैंड उनके सूरीनाम आदि देशों में हुए हिंदी सम्मेलनों में हिंदी एवं महत्व को निष्पादित कर हिंदी को वैशिक भाषा घोषित किया। ''10 जनवरी 1975 से पांच दिवसीय विश्व सम्मेलन नागपुर में संपन्न हुए। जिसका उद्घाटन श्रीमती इंदिरा गांधी ने तथा अध्यक्षता मॉरीशस के प्रधान मंत्री डश्व शिवसागरराम गुलाम ने की द्य मॉरीशस के प्रधानमंत्री ने हिंदी का समर्थन करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ में अन्य भाषाओं की तरह हिंदी को स्थान दिए जाने हेतु, मैं पूरा समर्थन करुँगा। इन्होंने हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा माना। अमेरिका, जर्मनी, स्वीडन संघ और त्रिनिडाड आदि देशों के प्रतिनिधियों ने इसका स्वागत किया।''6

7. हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय वैभव: व्यवहृत के कसौटी पर:

वैश्वीकरण के इस दौर में जहां दूरियां घट रही है, वहीं वैश्विक विचार-विमर्श के विनिमय के नए युग का सूत्रपात हुआ। मुल्कों ने एक साथ अनेक व्यापारों पर समझौते के हस्ताक्षर किये । इन व्यापारों एवं व्यवसायों के कारण हिंदी के अस्तित्व को भी विदेशी लोगों ने जाना। ''सुनने में आया है कि डेनमार्क स्थित 'स्टूडियो स्कोले' नाम एक प्रतिष्ठित लैंग्वेज स्कूल के 'हिंदी डिपार्टमेंट' में अपेक्षाकृत अब काफी विद्यार्थ है। वहाँ विदेशियों को हिंदी पढ़ाने वाली श्रीमती रजनी बहल कहती है कि पहले सीटें भरनी बड़ी मुश्किल होती थी। लोग सिर्फ चाइनीज़ व जापानीज़ सीखने आते थे मगर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार बढ़ जाने व इंडिया की इकोनॉमी सुदृढ़ हो जाने की वजह से लोग हिंदी सीखने लगे हैं। भारत की आर्थिक स्थिति बेहतर बनते देख विदेशियों में भारतीय राष्ट्रभाषा के प्रति रुझान बढ़ रहा है।''7

अमेरिका में हिंदी प्रशिक्षण को समृद्ध एवं सुदृढ़ करने का श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो वह है संस्था है-'स्टारटॉक'। अमेरिका के क विश्वविद्यालयों में आज हिंदी का वर्चस्व स्थापित है। नवीन तकनीक एवं यंत्रों के द्वारा हिंदी प्रशिक्षण की न पद्धति को विकसित कर लिया गया है। उदाहरण के लिए ''ड्यूक विश्वविद्यालय में श्रवण के लिए एक नए टूल 'प्ले-पॉजिट' (Play Posit) के बारे में बताया गया, जिसमें विद्यार्थी को एक वीडियो या ऑडियो की क्लिप दी जा सकती है और वीडियो को बीच में काट छाँटकर वीडियो के बीच बीच में ही प्रश्नों को डाला जा सकता है, वह भी हिंदी में। विद्यार्थ इसमें बहु-विकल्प वाले प्रश्न, खाली स्थान भरना, मत देना, अपने विचार बताना जैसे प्रश्नों का जवाब आसानी से लिखकर या बोलकर दे सकते है। विद्यार्थ वीडियो को बार-बार सुन सकते हैं और यह टूल ग्रडिंग भी सकता है। इसी तरह के नए-नए शोध और टूल के बारे में जानकारी विश्वविद्यालय खुद ही मुहैया करवाता है।''8

विश्व से हिंदी की सार्वजनीनता एवं सर्वमान्यता को देखकर हम यह निस्संदेह कह सकते है कि पूरे विश्व ने इस उदार भाषा को उद्बबाहू अपनाया है तथा विविध शिक्षण संस्थानों में इस भाषा के प्रशिक्षण हेतु विविध व्यवस्थाएँ की है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. सुखलाल गुलशन, गंगाधर सिंह: विश्व हिंदी पत्रिका, विश्व हिंदी सचिवालय: मॉरीशस, पृ. 84
2. सुखलाल, श्री गंगाधर सिंह (2015), विश्व हिंदी पत्रिका, विश्व हिंदी सचिवालय: मॉरीशस, पृ. 121

3. जुनेजा, पूनम (प्र. स.) 2012, विश्व हिंदी पत्रिका, विश्व हिंदी सचिवालय: मॉरीशस, पृ. 28
4. आप्टे, वामन शिवराम, संस्कृत-हिन्दी कोश, पृ. सं. 590
5. गोयनका कमल किशोर, 2014, प्रवासी साहित्य, गवेषणा अंक-103, जुला -दिसम्बर, पृ. 43
6. रस्तोगी, आलोक कुमार, साहित्यिक निबंध, प्रेम प्रकाशन मंदिर: दिल्ली, पृ. 213
7. मिश्र, विनोद कुमार (प्र. सं.) 2016, विश्व हिंदी पत्रिका, विश्व हिंदी सचिवालय: , मॉरीशस पृ. 18
8. मिश्र, विनोद कुमार (प्र. सं.) 2020, विश्व हिंदी पत्रिका, विश्व हिंदी सचिवालय:मॉरीशस , पृ. 106

ISBN: 978-81-954645-0-0